नियोजन

डा0 नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर मुरादाबाद

नियोजन का अर्थ व परिभाषा

एक संगठन बिना योजना के प्रभावशाली सिद्व नहीं हो सकता। जब एक प्रबन्धक को लक्ष्य व योजना स्पष्ट होती है तो वह भावी अनिश्चितताओं तथा मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का पूर्वानुमान लगाकर लक्ष्य पर पहुंचने के लिए ऐसी प्रभावी योजना बना सकता है जिसमें सफलता प्राप्त करने की सम्भावना अधिक हो। इसीलिए कहा जाता है कि कल के कार्य का आज निर्धरण करना ही नियोजन है।

"प्रत्येक प्रकार के संगठन या संस्था में लक्ष्यों का निर्धारण तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों की निर्धारण प्रक्रिया नियोजन कहलाती है।"

नियोजन की प्रकृति, तत्व, विशेषताएं

1. लक्ष्यों पर अधिक ध्यान
2. भावी अनिश्चितताओं का पूर्वानुमान
3. सर्वोत्तम विकल्प का चयन
4. सर्वव्यापकता
5. समन्वय व लोच
6. साधनों की सामितता
7. नियोजन प्रबन्ध का प्राथमिक कार्य
8. नियोजन प्रबन्ध का एक सतत् कार्य है
9. नियोजन नियन्त्रण से पूर्व का महत्वपूर्ण कदम

नियोजन का क्षेत्र

नियोजन एक व्यापक कार्य है, एक उपक्रम में सभी स्तरों पर तथा सभी विभागों में नियोजन कार्य किया जाता है। सभी प्रबन्धक सभी स्तरों पर योजनाएं बनाते है। किसी भी स्तर के नियोजन का क्षेत्र प्रबन्धक को प्राप्त अधिकारों द्वारा निर्धारित होता है। जिस प्रकार एक उपक्रम के सभी स्तरों पर नियोजन कार्य किया जाता है, उसी प्रकार नियोजन कार्य सभी प्रकार के उपक्रमों में किया जाता है चाहे उपक्रम का आकार व प्रकृति कुछ भी हो।

नियोजन के उद्देश्य

1. दिशा निर्धारित करना
2. बाहय वातावरण से सामंजस्य सीापित करना
3. संसाधनों का विवेकपूर्ण बंटवारा करना
4. अन्य प्रबन्धकीय कार्यो में सहायक होना

नियोजन का महत्व

1. नियोजन संगठन को प्रभावी बनाता है
2. नियोजन द्वारा संस्था के विभिन्न कार्यो में समन्वय स्थापित होता है
3. नियोजन कर्मचारियों की कर्तव्यनिष्ठा को जगाता है
4. नियोजन द्वारा समय के साथ चलना सम्भव होता है
5. प्रतिस्पर्द्धात्मक शक्ति में वृद्वि होती है
6. साधनों का सदुपयोग सम्भव होता है
7. नियोजन प्रबन्ध के अन्य कार्यो के सम्पादन में योगदान देता है
8. नियोजन आत्म विश्वास जगााता है
9. लाभ को अधिकतम करने में सहायक
10. प्रत्येक प्रकार के उपक्रम के लिए लाभदायक

नियोजन की सीमाएं

1. भविष्य की अनिश्चितता
2. शीघ्र परिवर्तन की समस्या
3. व्यय साध्य
4. नियन्त्रण का भय
5. प्रबन्धकों के विश्वास की समस्या
6. कार्य और पुरूस्कार में समयान्तर
7. लोच का अभाव
8. भारी पूंजी का विनियोग
9. निर्णयन में विलम्ब

सन्दर्भ ग्रन्थः—

1. व्यवसायिक प्रबन्ध के सिद्धान्त, डा0 आर0 सी0 गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।